थाट-तोड़ी

स्वर- सा रे॒ ग॒ मे प ध॒ नि सां

राग- मुलतानी

यह राग तोड़ी थाट से उत्पन्न होता है। इसका वादी स्वर पंचम और संवादी स्वर षड्ज है। आरोह में रे, ध वर्जित होने से इसकी जाति औड़ुव-संपुर्ण है। इस राग का समय दिन का चौथा प्रहर है। इस राग में ऋषभ, धैवत और गांधार इन स्वरों का प्रयोग बड़ी कुशलता से किया जाता है, क्योंकि इन स्वरों के गलत प्रयोग से श्रोताओं को कभी-कभी तोड़ी राग का आभास होना संभव है। मुलतानी में मध्यम व गांधार स्वरों की संगति व पुनरावृत्ति होती है। इस राग को 'परमेल-प्रवेशक' राग मानते हैं। काफी थाट से आगे संधिप्रकाश रागों में प्रवेश करने के लिये मुलतानी राग अत्यंत सुविधाजनक है। मुलतानी गाने में सा, प, नि ये विश्रांति-स्थान समझे जाते हैं तथा तरह-तरह की तानें इन पर समाप्त की जाती हैं। कुछ संस्कृत ग्रंथों में मुलतानी में गांधार तीव्र बताया है; किन्तु प्रचलित हिन्दुस्तानी संगीत-पद्धति में कोमल गांधार ही माना जाता है।

आरोह- ऩि सा, ग॒ मे प, नि सां

अवरोह- सां नि ध॒ प, मे ग॒, रे॒ सा

पकड़- ऩि सा, मे ग॒, प ग॒, रे॒ सा

स्वरमालिका

राग- मुलतानी, ताल- त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

ऩि सा मे ग॒ ३	प मे ध॒ प x	मे प नि ध॒ २	प ध॒ प मे ०
ग॒ मे प नि ३	सां नि ध॒ प x	मे ग॒ - मे २	ग॒ रे॒ सा - ०
ऩि सा मे ग॒ ३	प - ध॒ प x		

अन्तरा

प म ग म ३	प नि - सां x	नि सां गं रें २	सां नि ध प ०
म प नि ध ३	प ध प म x	ग म प म २	ग रे सा - ०

छोटा ख्याल

राग- मुलतानी, ताल- एकताल(मध्यलय)

स्थायी- नैनन में आन-बान, कौन-सी परी।।

अन्तरा- निसदिन सोवत पलक न खोलत,

जब देखो मुख श्याम की खरी।। नैनन......

स्वरलिपि

स्थायी

(म)प - नै ऽ x	म ग न न ०	(म)प - में ऽ २	(म)ग - आ ऽ ०	रे सा न बा ३	- सा ऽ न ४
(सा)नि - कौ ऽ x	सा म न सी ०	ग म ऽ प २	प - री ऽ ०	(म)ग म ऽ ऽ ३	प नि ऽ ऽ ४

अन्तरा

(म)प प नि स x	- (म)ग ऽ दी ०	- म ऽ न २	प नि सो ऽ ०	- सां ऽ व ३	- सां ऽ त ४
(सां)नि (सां)नि प ल x	सां (गं)रें ऽ क ०	- सां ऽ न २	(सां)नि - खो ऽ ०	सां नि ऽ ल ३	ध प ऽ त ४

(मं)प	में	प	(सां)नि	-	सां	(गं)रें	-	रें	सां	-	सां
ज	ब	ऽ	है	ऽ	खो	मु	ऽ	ख	स्या	ऽ	म
X		0		2		0		3		4	
(प)में	प	सां	नि	ध॒	प	(सा)नि	सा	मेंग॒	में	प	नि
की	ऽ	ऽ	ख	री	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ऽ
X		0		2		0		3		4	
(प)	-	में	ग								
नै	ऽ	न	न								
X		0									

तानें

राग- मुलतानी

स्थायी

(१) नि़सा ग॒में | पनि सांनि | ध॒प मेंग॒
0 | 3 | 4

(२) ग॒में पनि | सांरें॒ सांनि | ध॒प मेंग॒
0 | 3 | 4

(३) पनि सांगं॒ | रें॒सां सांरें॒ | सांनि ध॒प
0 | 3 | 4

(४) सांनि सांनि | ध॒प पग॒ | मेंग॒ रे॒सा
0 | 3 | 4

(५) गं॒रें॒ सांनि | ध॒प मेंग॒ | मेंग॒ रे॒सा
0 | 3 | 4

(६) नि़सा ग॒में | पग॒ -में | पनि सांप | -नि सांगं॒ | रें॒सां निध॒ | पमें ग॒में
X | 0 | 2 | 0 | 3 | 4

(७) नि़सा नि़ग॒ | साग॒ सामें | ग॒में ग॒प | मेंप मेंनि | पनि पसां | निध॒ पमें
X | 0 | 2 | 0 | 3 | 4

(८) ग॒में पग॒ | मेंप ग॒में | पनि सांप | निसां पनि | सांनि ध॒प | मेंग॒ रे॒सा
X | 0 | 2 | 0 | 3 | 4

अन्तरा

(१) सांनि धप | मेग गमे | पनि सां-
0 | ३ | ४

(२) गमे पनि | सां- गमे | पनि सां-
0 | ३ | ४

(३) पध पमे | गमे पनि | सां- सां-
0 | ३ | ४

(४) निसा मेग | पमे धप | निध सांनि
0 | ३ | ४

(५) निसां मेंगं | रेंसां निसां | गंरें सांनि | धप मेप | गम पनि | सां- सां-
X | 0 | २ | 0 | ३ | ४

Date
Page

बड़ा ख़्याल

राग – मुलतानी, ताल – त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी – गोकुल गाँव के छोरा, बरसाने की नारि रे ॥

अन्तरा – इन दोउन मन मोह लियो है, रहे सदारंग निहार रे ॥

स्वरलिपि

स्थायी

		सा सा	
– (प)ग़ रे़सा	सा नि़ सा सा	नि़ सा मंग़ प	मंप ,प (प)ग़ मंग़
ऽ गो ऽ कुल	गाँ ऽ ऽ व	के ऽ ऽऽ ऽ	ऽऽ ऽ,छो राऽ ऽऽ
३	×	२	०
म		मं	
ग़ मं प नि	– सां रें सां	प सां – नि	(प) मंग़ मंग़ ग़मंपनि
ब र सा ऽ	ऽ ने की ऽ	ना ऽ ऽ रि	रे ऽऽ ऽऽ ऽऽऽऽ
३	×	२	०

अन्तरा

मं मं		सां	सां
प (प)ग़ मं	प नि सां सां	नि निसां रें सां	नि सां नि धप
इ न दो ऽ	उ न म न	मो ऽऽ ह लि	यो ऽ है ऽऽ
३	×	२	०
मं	गं	सां सां	
ग़ मं प नि	सां रें सां सां	नि नि सां नि	(प) मंग़ मंग़ ग़मंपनि
र हे ऽ स	दा ऽ रं ग	नि हा ऽ ऽर	रे ऽऽ ऽऽ ऽऽऽऽ
३	×	२	०